



सौजन्य से -Yogesh Tripathi

बंजर भूमि पर फूलों का संसार ट्यूलिप गार्डन मुनस्यारी

हिमनगरी मुनस्यारी में ट्यूलिप गार्डन की खूबसूरती देखते ही बन रही है. 9 हजार फीट की ऊँचाई पर ट्यूलिप के रंग बिरंगे फूल मुनस्यारी की सुंदरता पर चार चांद लगा रहे हैं. साथ ही पर्यटन के नए द्वार भी खोल रहे हैं. वन विभाग ने एक खास प्रोजेक्ट के तहत इको पार्क के 30 हेक्टेयर के हिस्से मेंब्लू आइरिस, व्हाइट आइरिस, रैननकुलस, फॉक्स, ग्लोब, ब्रेन और डॉग टेल जैसी प्रजातियों के ट्यूलिप खिलाए हैं. इस प्रयोग के सफल होने के बाद अब पर्यटन नगरी मुनस्यारी ट्यूलिप के फूलों से गुलजार रहेगी.

CALENDAR

20
22

जनवरी

JANUARY

पूष

माघ

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29



www.pithoragarhtourism.in



[/pithoragarhtourism.in](https://www.facebook.com/pithoragarhtourism.in)



[/pithoragarhtourism](https://www.instagram.com/pithoragarhtourism)



सौजन्य से – Picture palace pithoragarh

कामाख्या मंदिर पिथौरागढ़

पिथौरागढ़ जिले से 7 किलोमीटर दूर कुसौली गांव में माँ कामाख्या देवी का मंदिर स्थित है। यह स्थान सुंदर चोटियों से घिरा हुआ है, यह केंद्र आध्यात्मिक शांति के साथ—साथ श्रद्धालुओं को प्रकृति से भी जोड़ता है। मदन मोहन शर्मा ने 1972 में देवी की 6 सिरों वाली मूर्ति को जयपुर से यहां लाकर कामाख्या मंदिर में इसकी स्थापना की थी। अद्भुत सौंदर्य से भरपूर देवी की मूर्ति के दर्शन दूर से ही किए जा सकते हैं। मंदिर में मकर संक्रांति, जन्माष्टमी, शिवरात्रि को विशेष पूजा—अर्चना की जाती है। इस मंदिर की विशेषता है कि यह उत्तराखण्ड में कामाख्या देवी का एकमात्र मंदिर है। मंदिर में नवरात्रि पर 10 दिनों तक अखंड ज्योति जलाने के साथ—साथ विशेष पूजा की जाती है। साथ ही भजन—कीर्तन का आयोजन किया जाता है। लोगों का विश्वास है कि एक बार इस मंदिर के दर्शन करने से लोगों की सारी मनोकामना पूर्ण हो जाती है।

CALENDAR

20
22

फरवरी

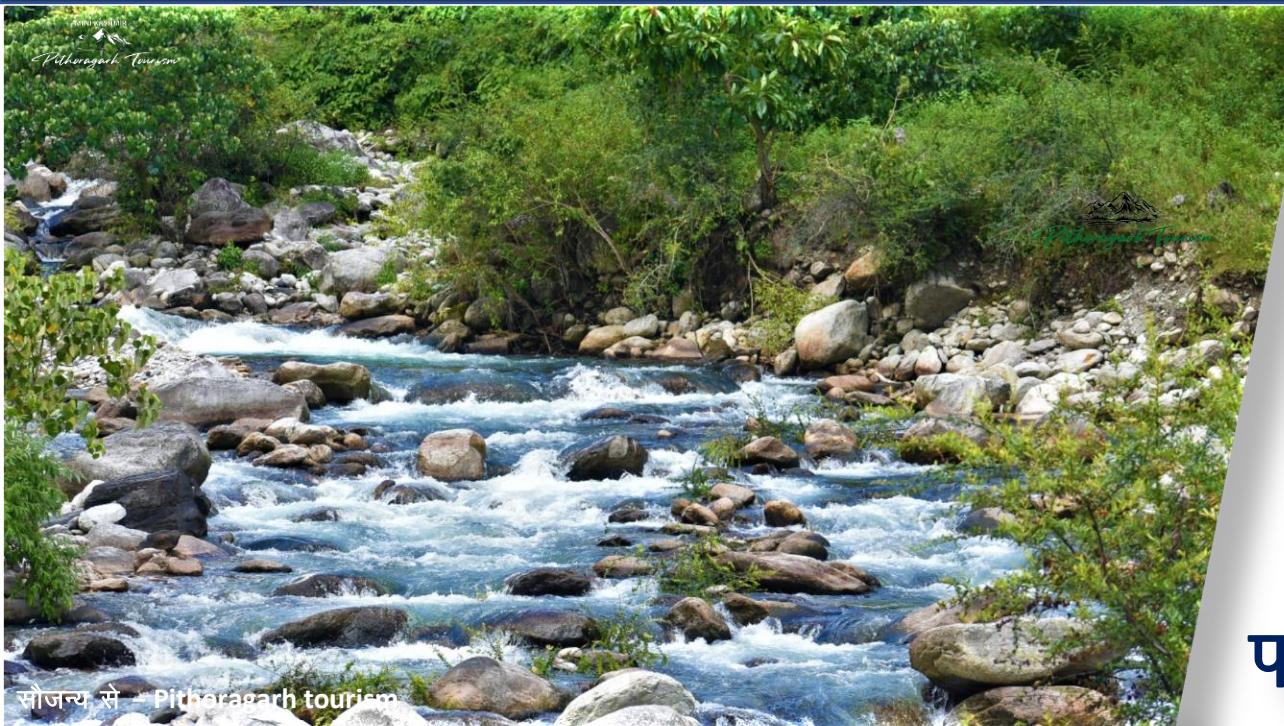
FEBRUARY

माघ

फागुन

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
30	31	1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28					





प्राकृतिक सौन्दर्यता से भरपूर 'छोटा कश्मीर'

'छोटा कश्मीर' के नाम से भी जाना जाने वाला पिथौरागढ़ अपनी प्राकृतिक सुंदरता और शांति के लिए प्रसिद्ध है। पिथौरागढ़ घने जंगलों और समृद्ध वनस्पतियों के लिए जाना जाता है। स्थानीय लोगों द्वारा इस स्थान का उपनाम सोर-घाटी रखा गया है। ऐसा लगता है मानो पिथौरागढ़ प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर है। पिथौरागढ़ भूमि उच्च हिमालयी पहाड़ों, बर्फ से ढकी चोटियों, दर्रों, घाटियों, अल्पाइन घास के मैदानों, जंगलों, झरनों, बारहमासी नदियों, ग्लेशियरों और झरनों से युक्त है। यह क्षेत्र विविध वनस्पतियों और जीवों में भी समृद्ध है।

CALENDAR

20
22

मार्च

MARCH

फागुन

चैत

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		



www.pithoragarhtourism.in



[/pithoragarhtourism.in](https://www.facebook.com/pithoragarhtourism.in)



[/pithoragarhtourism](https://www.instagram.com/pithoragarhtourism/)

20
22

CALENDAR

अप्रैल

APRIL

चैत

वैशाख



सोजन्य से – Pithoragarh tourism

कुमाऊं रेजिमेंट की अराध्य हैं देवी हाट कालिका

उत्तराखण्ड को देवभूमि कहा जाता है। यहां पर बद्रीनाथ, केदारनाथ, जागेश्वर धाम जैसे शक्तिपीठ, तीर्थस्थल और ज्योतिर्लिंग हैं। इसके अलावे राज्य में कई ऐसे मंदिर हैं, जो अपने आप में कई रहस्य को समेटे हुए हैं। हाट कालिका मंदिर पिथौरागढ़ के गंगोलीहाट में स्थित है। यहां पर माँ काली खुद प्रकट हुई थी। हाट कालिका महाशक्ति पीठ देवदार के पेड़ों से चारों तरफ से घिरा हुआ है। पौराणिक दृष्टि से हाट कालिका महाशक्ति पीठ काफी महत्वपूर्ण है। स्कंदपुराण के मानस खंड में यहां स्थित देवी का वर्णन मिलता है। मान्यता के अनुसार, कालिका का रात में डोला चलता है। कहा जाता है कि अगर कोई इस डोले को छू ले तो उसे दिव्य वरदान की प्राप्ति होती है।

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30



www.pithoragarhtourism.in



[/pithoragarhtourism.in](https://www.facebook.com/pithoragarhtourism.in)



[/pithoragarhtourism](https://www.instagram.com/pithoragarhtourism/)



सौजन्य से - Pithoragarh tourism

पंचाचूली पर्वत

पंचाचूली पर्वत पांच पर्वत चोटियों का समूह है. जिनके नाम पंचाचूली 1 से पंचाचूली 5 तक हैं. इस चोटी की समुद्रतल से ऊँचाई 6,312 मीटर से 6,904 मीटर तक है. पंचाचूली पर्वत का नाम पुराणों में भी आता है. माना जाता है कि महाभारत युद्ध के उपरांत कई वर्षों तक पांडवों ने सुचारू रूप से राज्य संभाला. वृद्ध होने पर उन्होंने स्वर्गारोहण के लिए हिमालय की ओर प्रस्थान किया. मान्यता है कि हिमालय में विचरण करते हुए इस पर्वत पर उन्होंने अंतिम बार अपना भोजन बनाया था. इसके पांच उच्चतम बिंदुओं पर पांचों पांडवों ने पांच चूल्हे बनाये थे, इसलिए यह स्थान पंचाचूली कहलाता है. धार्मिक ग्रन्थों में इसे पंचशिरा भी कहते हैं. यहाँ के ग्रामीणों की यह मान्यता है कि पाँचों पर्वत युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम, नकुल और सहदेव. पाँच पांडवों के प्रतीक हैं.

CALENDAR

20
22

ਮई

MAY

वैशाख

जेठ

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	28



www.pithoragarhtourism.in



[/pithoragarhtourism.in](https://www.facebook.com/pithoragarhtourism.in)



[/pithoragarhtourism](https://www.instagram.com/pithoragarhtourism/)



सौजन्य से – In Munsyari

खास हैं परिधान और आभूषण

वस्त्र किसी भी क्षेत्र और समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक के साथ आर्थिक पृष्ठभूमि को परिलक्षित करते हैं। पारंपरिक रूप से उत्तराखण्ड की महिलाएं घाघरा व आंगड़ी और पुरुष चूड़ीदार पैजामा व कुर्ता पहनते थे। समय के साथ इनका स्थान पेटीकोट, ब्लाउज व साड़ी ने ले लिया। विवाह आदि शुभ कार्यों के अवसर पर कई क्षेत्रों में आज भी शनील का घाघरा पहनने की रवायत है। गले में गलोबंद, चर्यों, जै माला, नाक में नथ, कानों में कर्णफूल, कुंडल पहनने की परंपरा है। सिर में शीशफूल, हाथों में सोने या चांदी के पौँजी व पैरों में बिछुवे, पायजेब, पौंटा पहने जाते हैं। घर-परिवार के समारोहों में ही आभूषण पहनने की परंपरा है। विवाहित स्त्री की पहचान गले में चरेऊ पहनने से होती है। विवाह इत्यादि शुभ अवसरों पर पिछौड़ा पहनने का रिवाज भी यहां आम है।

CALENDAR

20
22

जून

JUNE

जेठ

असाढ़

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
29	30	31	1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25



20
22

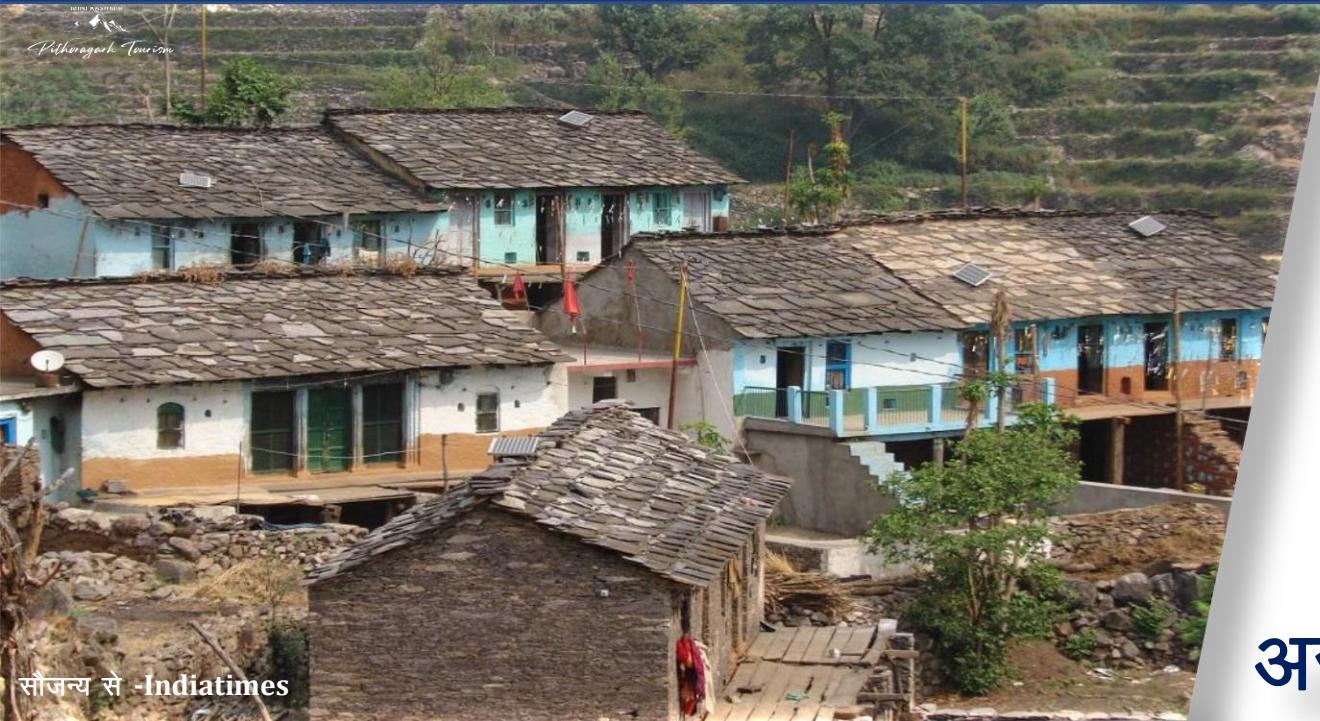
CALENDAR

जुलाई

JULY

सौण

असाढ़



सौजन्य से -Indiatimes

21 साल : पहाड़ का पानी और पहाड़ की जवानी

राज्य आंदोलनकारियों ने जिन सपनों को लेकर अलग राज्य की लड़ाई लड़ी थी, आज भी उनके सपने धरातल पर साकार नहीं हुए हैं। इसका सजीव उदाहरण सीमांत जिला पिथौरागढ़ है। सरकार ने इन 21 वर्षों में करोड़ों रुपये विकास के नाम पर खर्च कर दिए, लेकिन आज भी लोग मूलभूत सुविधाओं से कोसो दूर हैं। यही वजह है कि दर्जनों गांव अब वीरान हो चुके हैं। आज भी पिथौरागढ़ के 40 से ज्यादा गांव सड़क से वंचित हैं। पहाड़ी क्षेत्रों की अगर बात करें तो कई गांव ऐसे हैं, जहां शिक्षा, सड़क, और स्वास्थ्य जैसी मूलभूत सुविधाएं शून्य हैं, जिस कारण पिथौरागढ़ जिले के 59 गांव की आबादी अब गांव छोड़कर जा चुकी है। पहाड़ों में रोजगार और शिक्षा का अभाव होने से धीरे-धीरे लोग पहाड़ों को छोड़कर शहरों की ओर रुख कर रहे हैं।

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
26	27	28	29	30	1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30



www.pithoragarhtourism.in



[/pithoragarhtourism.in](https://www.facebook.com/pithoragarhtourism.in)



[/pithoragarhtourism](https://www.instagram.com/pithoragarhtourism)



सोजन्य से - Picture palace Pithoragarh

धारचूला पहाड़ों के बीच छुपा हुआ खजाना

धारचूला दो शब्दों धार और चूला से मिलकर बना हुआ है जिनका अर्थ होता है धार यानि चोटी और चूला यानि स्टोव। यह शहर एक पहाड़ी क्षेत्र है जिसका आकार स्टोव के जैसा दिखता है इसीकारण इस शहर को धारचूला कहते हैं। यह शहर पिथौरागढ़ से 90 किमी. की दूरी पर स्थित है जो पहाड़ों से घिरा हुआ है। मध्यकालीन काल से धारचूला ट्रांस-हिमालयी व्यापार मार्गों के लिए एक प्रमुख व्यापार का केंद्र था। अगर आप पर्यटन की दृष्टि से इस शहर को देखें तो मानस झील या मनासा सरोवर इस शहर का सबसे प्रमुख पर्यटक आकर्षण हैं। मानसरोवर एक ताजे और मीठे पानी की झील है जो चीन के तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र में स्थित है।

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
31	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

CALENDAR

20
22

अगस्त

AUGUST

सौण

भद्रै





सौजन्य से Vinita Yashwashi

दारमा घाटी

दुग्तू पिथौरागढ़ जिले की दारमा घाटी का एक छोटा सा गांव है। पंचाचूली की गोद में बसा इस बेहद खूबसूरत गाँव में रं समाज के लोगों को निवास है जो कि दारमा घाटी का जनजाती समाज है। इनकी अपनी परंपरायें और रहन-सहन बेहद अलग और शानदार हैं। ये गाँव पंचाचूली बेस कैम्प जाने वाले रास्ते में पड़ता है और कई लोग रात इस गांव में बिताना भी पसंद करते हैं। दुग्तू गांव में लगभग 100–150 परिवार रहते हैं पर अब यहाँ से पलायन होने लगा है इस पलायन के कारण अब यहाँ की परंपरायें बिखरने लगी हैं और लोग अपनी पारंपरिक चीजों को छोड़ने लगे हैं। पहले जहाँ पत्थर के मकान बनते थे जिनमें मिट्टी की पाल होती थी और लकड़ी के खिड़की दरवाजों में जो तरह-तरह की नक्काशियाँ की जाती थी उसकी जगह अब सीमेंट ने ले ली है।

20
22

CALENDAR

अक्षितंश्वर

SEPTEMBER

भद्रौ

असोज

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	





CALENDAR

20
22

अक्टूबर

OCTOBER

असोज

कात्तिक

चौकोरी

कहते हैं देखने में सभी हिल स्टेशन एक जैसा होता है लेकिन हर पहाड़ की अपनी खूबसूरती होती है अगर बात चौकोरी की जाए तो उनकी बात ही अलग है एक तरफ जहां हरियाली से लकदक ऊँचे पहाड़ हैं तो दूसरी ओर बर्फ से ढकी पहाड़ियां। सूरज की लालिमा इन बर्फ से ढके पहाड़ों पर पड़ती है तो लगता है मानो हम स्वर्ण देश में आ गए हैं। यहां का हर नजारा दिल को सुकून पहुंचाता है। शांत शीतल हवा शरीर में नई सुफूर्ति का संचार करती है। चौकोरी की खूबसूरती को बयां करती। चौकोरी की सुंदरता में मक्के के खेत और फल चार चांद लगाते हैं।

SUN

2
9
16
23

MON

3
10
17
24

TUE

4
11
18
25

WED

5
12
19
26

THU

6
13
20
27

FRI

7
14
21
28

SAT

1
8
15
22
29



www.pithoragarhtourism.in



[/pithoragarhtourism.in](https://www.facebook.com/pithoragarhtourism.in)



[/pithoragarhtourism](https://www.instagram.com/pithoragarhtourism/)



Pithoragarh Tourism

सौजन्य से -TripNight

नारायण आश्रम , धारचूला

यह आश्रम पिथौरागढ़ से 116 किलोमीटर की दुरी पर स्थित है। इस आश्रम को स्थानीय तौर पर "बंगबा" या "चौदास" भी कहा जाता है। इस आश्रम को 1936 में एक साधू एवं सामाजिक कार्यकर्ता "नारायण स्वामी" के द्वारा स्थापित किया गया। नारायण आश्रम 1962 के भारत-चीन युद्ध से पहले कैलाश मानसरोवर की यात्रा के लिए तीर्थयात्रियों के लिए एक आराम स्थान के रूप में सेवा करते थे। 1990 के दौरान कैलाश मानसरोवर यात्रा की बहाली के बाद से तीर्थयात्रा का मार्ग बदल गया और नारायण आश्रम मार्ग में तीर्थयात्रीयों का इस स्थान में आना कम होने लगा। वर्तमान समय में इस स्थान की सुन्दरता इतनी अधिक है कि देश के कोने-कोने के प्रकृति प्रेमी इस आश्रम में रहकर हिमालय के अद्भुत दर्शन करते हैं। इस आश्रम में हर साल हजारों की संख्या में विदेशी और देशी पर्यटक यहां ध्यान आकर आत्म शांति प्राप्त करते हैं।

CALENDAR

20
22

नवंबर

NOVEMBER

कात्तिक

मंसिर

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
30	31	1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			



www.pithoragarhtourism.in



[/pithoragarhtourism.in](https://www.facebook.com/pithoragarhtourism.in)



[/pithoragarhtourism](https://www.instagram.com/pithoragarhtourism)



सौजन्य से -Munshyari.in



20
22

CALENDAR

दिक्षिण

DECEMBER

मंसिर

पूष

सात संसार एक मुन्स्यारी , मुन्स्यारी

प्राकृतिक खूबसूरती का एक जीता जागता उदाहरण है। मुन्स्यारी एक छोटा और बेहद खूबसूरत हिल स्टेशन है। ये हिल स्टेशन अधिकतर बर्फ से ढका हुआ है। मुन्स्यारी में धूमने और देखने के लिए बिर्थी फॉल , खलिया टॉप , कालामुनि मंदिर , थमरी कुंड , महेश्वरी कुंड , नन्दा देवी मंदिर , पंचचूली पर्वत लोकप्रिय स्थान है। पंचचूली पर्वत के बारे में कहा जाता है कि यह पांच शिखरों से मिलकर बनी हुई है। यह भी मान्यता है कि महाभारत काल में इसी पर्वत पर पांडवों ने स्वर्गारोहण की शुरुआत की थी। ये भी कहा जाता है कि ये पांच चोटियां इन्हीं पांचों पांडवों का प्रतीक हैं।

SUN	MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31



www.pithoragarhtourism.in



[/pithoragarhtourism.in](https://www.facebook.com/pithoragarhtourism.in)



[/pithoragarhtourism](https://www.instagram.com/pithoragarhtourism)